उत्कृष्ट
शंका-समाधान

'मानव मन को आन्दोलित करने वाले
लौकिक-पारलौकिक प्रश्नों के सटीक उत्तर'

समाधानकर्ता

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक

सम्पादक

डॉ. राधावल्लभ चौधरी

(एम.बी.बी.एस)

प्रकाशक

दर्शन योग महाविद्यालय

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद,
जि. साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७

दूरभाष : (०२७७०) २८७४१८, २८७५१८
चलभाष : ९४०९४ १५०११, ९४०९४ १५०१७

Email : darshanyog@gmail.com • **Website :** www.darshanyog.org
Youtube : darshanyog2009 • **Facebook / Orkut / Skype :** darshanyog

पुस्तक	:	उत्कृष्ट शंका-समाधान
उपदेशक	:	स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक निदेशक, दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, पत्रा.- सागपुर, जिला- साबरकांठा, (गुजरात)
संपादन एवं संकलन	:	डॉ. राधावल्लभ चौधरी (एम.बी.बी.एस)
प्रकाशन तिथि	:	पौष 2069 (जनवरी 2013) सृष्टि संवत् 1960853113
संस्करण	:	द्वितीय
लागत मूल्य	:	65/- रुपये

प्राप्तिस्थान

वैदिक संस्थान : ५, प्रथम तल, आदर्श कॉम्पलेक्स, ओढव, अहमदाबाद -१५

आर्यसमाज मंदिर : महर्षि दयानन्द मार्ग, रायपुर दरवाजा बाहर,अहमदाबाद.(गुज)

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द : ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

आर्य प्रकाशन : ८१४, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-६

ऋषि उद्यान : आना सागर, पुष्कर रोड, अजमेर (राजस्थान)

आर्य प्रतिनिधि सभा : १५, हनुमान रोड, दिल्ली

श्रुति न्यास : सी-७३, सै.-१५, राउरकेला (उड़ीसा)

गुरुकुल आश्रम आमसेना : खरियार रोड, जि. नवापारा, उड़ीसा-७६६१०९

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय : खर्राघाट, नर्मदापुरम्, होशंगाबाद (म.प्र.) ४६१००१

सर्वोदय साहित्य मंदिर : रेलवे प्लेटफार्म नं. १, अहमदाबाद. (गुजरात)

श्री चंद्रेश आर्य : ३१०/वार्ड नं. ११ बी, साधु वासवाणी सोसा.,गोपालपुरी, गाँधीधाम

वानप्रस्थ साधक आश्रम : आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, जि.साबरकांठा(गुज)

विजय वस्त्र भंडार : निलंगा, ४१३५२१ (महाराष्ट्र)

आर्य समाज मन्दिर : पोरबंदर, राजकोट, भरुच, मोरबी, टंकारा, जूनागढ़, गांधीनगर, आणंद, जामनगर आदि

विषय सूची

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
(अ)	शंका समाधानकर्ता का संक्षिप्त परिचय	
(ब)	शंका समाधान कर्ता की ओर से स्पष्टीकरण	
(स)	मेरे अपने भाव	
01.	'शंका समाधान' क्या है, इससे क्या लाभ होते हैं। कृपया इसके नियम बताइये ?	25
02.	क्या संसार में कहीं सुरक्षा नहीं है। मॉ की गोद में भी नहीं ?	30
03.	सृष्टि (जगत्) में सभी जीव, परमात्मा के लिए संतानवत् हैं तो परमात्मा प्राकृतिक प्रकोप के द्वारा क्या दर्शाना चाहता है - दयालुता या न्यायकारिता ? कइ जीव पृथ्वी पर पैर रखते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। ऐसा क्यों ?	32
04.	क्या ज्यादा धन कमाना ठीक नहीं है ? यदि सच्चाई के साथ यम - नियमों के पालन का पूर्ण प्रयास करते हुए कमाया जाये तो ?	34
05.	धन का उपयोग 'सत्कर्म' में भी तो कर सकते हैं ?	35
06.	ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है, फिर ईश्वर ने ऐसा संसार क्यों नहीं बनाया, जिसमें केवल सुख ही होता, दुःख बिल्कुल न होता। भौतिक सुखों में दुःख क्यों है ?	36
07.	सृष्टि का प्रयोजन जीवात्माओं को लौकिक सुख और मोक्ष का सुख देने के लिए है। किन्तु योग-दर्शन में कहा गया है कि लौकिक सुख, दुःख से मिश्रित है, इसलिए लौकिक सुख हेय-कोटि में आते हैं। इस विरोधभास को सुलझाने का प्रयत्न करें ?	38
08.	इन्द्रियों के सुखों को भोगकर उनसे तृप्त होना अच्छा है, दमन (सप्रेशन) करना अच्छा नहीं, ओशो, फ्रायड ने ऐसी बातें कही हैं। क्या सही है ?	41
09.	मानव तो उन्नति कर रहा है, अतः भगवान को तो खुश होना चाहिये ?	42
10.	संसार की घटनाओं से हमें कैसे और क्या सीखना चाहिये ? क्या संसार में प्राप्त होने वाले सुख-दुःख को हमें याद रखना चाहिये या भूल जाना चाहिये ?	43
11.	'आत्मा' और 'शरीर' बुरी तरह एक दूसरे में घुले-मिले हैं, इनको अलग-अलग कैसे मानें ?	44
12.	एक वाक्य लिखा है कि मेरी आत्मा नहीं मानती। यह वाक्य कौन कहता है - मेरी आत्मा नहीं मानती। इसका मतलब, मैं आत्मा से भी अलग चीज हूँ ?	45

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
13.	जो हम चाहते हैं, वो हमें नहीं मिलता। जो हम नहीं चाहते, वो हमें मिल जाता है। ऐसा क्यों ?	46
14.	सारे लोग हमारी इच्छा के अनुकूल व्यवहार करें, क्या ऐसा हो सकता है ?	47
15.	रेलगाड़ी और शरीर दोनों ही जड़ पदार्थ हैं, शरीर की वृद्धि होती है, गाड़ी की वृद्धि क्यों नहीं होती ?	49
16.	स्व-स्वामी संबंध अर्थात् मैं इस शरीर का स्वामी नहीं हूँ। यह बात ता ठीक है, लेकिन मैं अपने मन का स्वामी हूँ, यह कैसे ठीक हुआ ?	49
17.	आत्मा हाड़-मॉस से बने इस शरीर में रहना क्यों पसंद करती है ?	51
18.	मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम-कृति है, वह इस संसार में रहते हुए मोक्ष प्राप्ति का प्रयत्न करता है। तब 'यह संसार मूढ़ व्यक्ति के लिए है' यह बात कैसे उचित हुई ?	54
19.	ईश्वर ने मनुष्यों और अन्य प्राणियों को सुख- दुःख भोगने के लिए जन्म दिया है। ऐसा क्यों है ?	56
20.	क्या वेदों में नाचने (डांस) का विधान है ? अगर है, तो किसलिए ?	57
21.	क्या सोचने में दोष होने से, व्यक्ति सुख से जीना चाहने पर भी, सुख से नहीं जी सकता ?	58
22.	सूक्ष्म-इच्छाओं से मुक्त कैसे हुआ जाए। क्या संसार में रहते हुए यह संभव है ?	60
23.	सुंदर शरीर, कपड़े, गाड़ी, सुंदर काले बाल, पूरी लंबाई का क्या महत्त्व है ?	62
24.	आत्मा हर समय सुविचारों को ही क्यों नहीं उठाता, क्योंकि आत्मा को पवित्र बताया गया है, मन में अशुद्ध विचार जैसे - चोरी-व्यभिचार, हिंसा, असत्य आदि अनुचित विचार क्यों आते हैं ?	63
25.	ज्ञान बिना कर्म नहीं, तो मोक्ष के लिये पतंजलि निर्दिष्ट अष्टांग-योग पढ़ना, समझना, आचरण में लाना क्यों काफी नहीं है ? हर एक दर्शन, वेद पढ़ना क्यों जरूरी है? इसमें तो काफी समय लगेगा ?	64
26.	क्या मुक्ति के लिये मनुष्य योनि ही अनिवार्य है ? अन्य योनियों में मुक्ति नहीं हो सकती ?	66
27.	क्या कीट, पतंग, सर्प, जीव जंतु आदि मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं, यदि हॉ तो कैसे ?	66
28.	मोक्ष से लौटने के बाद पहला जन्म शूद्र परिवार में क्यों मिलेगा ?	67

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
29.	आपने कहा कि मोक्ष से लौटने पर पहला जन्म शूद्र का होता है, परंतु मोक्ष फल तो अति उत्तम कर्मों से मिलता है। और ऐसी आत्मायें यदि फिर जन्म लें, तो उच्च कोटि के मनुष्य के रूप में ही होनी चाहिये ?	70
30.	एक विदेशी महिला भारत में रहते हुए अपने जीवन-काल में दूसरों की सेवा करती रहीं। उन्होंने शायद ईश्वर उपासना नहीं की। यम, नियम का पालन नहीं किया। तो क्या वे मोक्ष की अधिकारी थीं ?	71
31.	मरने के बाद कहानी खत्म नहीं होती। ऐसा क्यों कहा जाता है ?	71
32.	खराब काम करने वाले को खराब योनि मिलती है। आज पचहत्तर प्रतिशत व्यक्ति खराब काम करते हैं, फिर भी संसार में मनुष्यों की संख्या क्यों बढ़ती ही जा रही है ? क्या सभी अधिकारी जीवों का मुक्ति-काल समाप्त हो गया है, क्या वे मुक्ति से लौटकर आ रहे हैं ?	72
33.	बहुत जन्मों के बाद अच्छे कर्म करने से मनुष्य जन्म मिलता है। धरती पर अब बहुत कम मात्रा में अच्छे कर्म हो रहे हैं, बुरे कर्म ज्यादा हो रहे हैं, इस हिसाब से मनुष्यों की बस्ती (संख्या) कम होनी चाहिए, लेकिन मानव बस्ती तो बढ़ती जा रही है ?	75
34.	क्या सृष्टि में जीवों की जनसंख्या निश्चित है। संसार में मानव, पशुओं, पक्षियों, जीव-जंतुओं की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है तो एक बार संख्या निश्चित होती है तो बढ़ती कैसे है ?	76
35.	क्या सौ प्रतिशत अच्छे कर्म करने के लिये संन्यास लेना अनिवार्य है या गृहस्थ में रहते हुये भी व्यक्ति सौ प्रतिशत अच्छे कर्म करके मोक्ष में जा सकता है ?	78
36.	क्या समाधि काल में, योगी के पूर्वकृत कर्म नष्ट हो जाते हैं या बचे रहते हैं ? क्या समाधि लगाने से, पूर्वकृत कर्म, बिना फल दिये भी नष्ट हो सकते हैं ?	79
37.	पूरा प्रयास करने पर कितने सालों में या एक जन्म में मोक्ष पा सकते है ?	80
38.	शुभ-कर्म निष्काम-भावना से किस प्रकार किए जाते हैं ? किराने का व्यापारी अपनी दुकानदारी निष्काम भावना से किस प्रकार कर सकता है ?	82
39.	मोक्ष की इच्छा एक कामना है, मोक्ष की कामना से किया हुआ निष्काम कर्म सकाम हो सकता है ?	84
40.	क्या कार्य में 'भावना' महत्वपूर्ण होती है, इससे 'फल' में अंतर आता है ?	85
41.	अन्यायपूर्वक मिले दुःख या हानि की ईश्वर क्षतिपूर्ति करता है। जैसे सेठ के यहॉ चोर ने चोरी की, इस अन्याय की क्षतिपूर्ति ईश्वर सेठ को किस प्रकार करेगा ?	86

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
42.	हम पर जो अन्याय हुआ, किसी की भी वजह से हमको जो नुकसान उठाना पड़ा, तो जो हमारा नुकसान हुआ, उसका क्या हुआ ?	87
43.	पुर्नजन्म के सिद्धान्तों के व्यावहारिक-प्रमाण क्या हैं ?	88
44.	क्या व्यक्ति को बुरे कर्म करने के पश्चात अन्य सभी योनियों को भोगना पड़ेगा अथवा कुछ योनियों के पश्चात् वापस मानव जन्म मिलेगा ?	90
45.	क्या योनियों की संख्या 84 लाख है ?	91
46.	जीवन में घटने वाली प्रत्येक घटना क्या निश्चित होती है ? पूर्वजन्म के कर्म-फलित होते हैं, ऐसा कहते हैं? कृपया मार्गदर्शन कीजिये ?	91
47.	जीवात्मा भविष्य में जो विचार करेंगे, उसका ज्ञान ईश्वर को पहले से हो सकता है या नहीं ?	99
48.	मनुष्य ने इतने अविष्कार किये हैं, क्या ईश्वर यह पहले से जानता था, या वह आश्चर्य करता है ?	100
49.	ईश्वर के ज्ञान में केवल आवृत्ति होती रहती है, सर्वज्ञ ईश्वर को इसकी क्या आवश्यकता है ?	100
50.	क्या कोई हमारा भविष्यफल बता सकता है ?	101
51.	क्या योगी व्यक्ति भविष्य की बातों का ज्ञान कर सकता है, जैसे दयानंद जी के बारे में पढ़ने को मिलता है ?	103
52.	पंचांग-पत्रा, ज्योतिष विद्या को मानने से क्या हानियॉ होती हैं ? क्या यह वेद अनुसार है ?	105
53.	''ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते'' अर्थात् वेद के ज्ञान प्राप्ति का साधन ज्योतिष नेत्र (आँख) रूप से है, और ज्योतिष वेद का अंग है, तो ज्योतिष का उपयोग आधिदैविक,आधिभौतिक, आध्यात्मिक पापों से छुड़ाने में क्या हो सकता है ? वेद के ज्योतिष को कृपया समझाएँ।	107
54.	क्या आप मेरा भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल बता सकते हैं ? अगर नहीं बता सकते, तो क्या आप ऐसे महानुभाव को जानत हैं, जो ऐसा करने में सक्षम है ?	109
55.	क्या जादूगरी ऑखों का धोखा होता है ?	110
56.	क्या झाड़-फूँक करने वाले बाबाजी अथवा टोटके आदि करने वाले बाबाजी सब कोरा ढोंग मात्र हैं। तो फिर झाड़ू मारने से मिर्गी कैसे भाग गई ?	112
57.	डिस्कवरी चैनल में भूत-प्रेत की कथाएं और कथित घटनाओं का ब्यौरा दे रहे हैं। सारे घटित दृश्य भी दिखाते हैं। क्या यह असत्य है?	113

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
58.	आज सुबह हम ध्यान में मन नहीं लगा पाये। जब गुरूजी ने कहा कि - अपनी हथेलियॉ घर्षण करके ऑखों में लगाओ, उसी समय मैंने कल्पना में देखा कि हम हवन में बैठे हैं और एक लड़की आई और रखा हुआ दीपक बुझा दिया। तब से मेरा मन परेशान है?	113
59.	क्या किसी मंत्र के जाप से या यज्ञ करने से कष्ट दूर हो सकते हैं ? जबकि सुना यह जाता है - ''अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतम् कर्म शुभाशुभम्।''	114
60.	कहा जाता है कि गायत्री मंत्र का एक लाख जाप करने वाला चोरी, ब्रह्महत्या, गुरू पत्नी के साथ व्यभिचार आदि पापकर्म से मुक्त होता है, कृपया मार्गदर्शन करें ?	115
61.	'सति मूले तद्विपाको जात्यायुभोगाः'।।'' योग.2/3।, इस सूत्र में आए भोग के विषय में जानना चाहता हूँ ?	116
62.	क्या जाति, आयु, भोग निश्चित हैं, या इन्हें घटाया-बढ़ाया जा सकता है। इसकी सीमा क्या होगी ?	119
63.	मनुष्य की आयु निश्चित है या नहीं? है तो कितनी ?	121
64.	स्वाभाविक आयु कितनी है ?	123
65.	वन्य पशु-पक्षी अपना जीवन स्वच्छन्दता से जीते हैं। इसके बावजूद क्या वे दुःखी हैं अथवा क्या ईश्वर ने इन्हें सृष्टि-नियमन के लिए बनाया है ?	124
66.	अगर पशु योनि में बुद्धि नहीं है, तो उनकी क्रिया जैसे कि लागणी, प्रेम, स्वरक्षण जैसे गुण कहॉ स्थित होते हैं ?	125
67.	कई श्रेष्ठ व्यक्ति अपने सेवाभावी कार्यों के लिए जाने जाते हैं। परंतु उन्होंने कभी वेद के अनुसार ईश्वर की उपासना नहीं की। ईश्वर इन्हें दण्ड देगा या पुरस्कार ?	126
68.	छोटी बच्ची के साथ दुष्कर्म करना, छोटे बच्चों को पकड़कर अंग काटना, भीख मॅगवाना आदि करने वालों के विरूद्ध भगवान अपनी शक्ति क्यों नहीं दिखाता ? उन बच्चों ने क्या अपराध किया ?	126
69.	जब तक हम स्थूल (शारीरिक, वाचनिक) रूप से किसी पर प्रभाव नहीं डालते, तब तक गुनाह नहीं हो सकता। मन में एक पल के लिये बुरा विचार आया और अगले ही पल विचार बदल गया। तो विचार मात्र से पाप क्यों माना जाये अर्थात् बिना क्रिया के परिणाम या फल कैसे ?	127
70.	किस प्रकार के कर्मों के आधार पर स्त्री या पुरूष का जन्म मिलता है ?	129
71.	स्वामी सत्यपति जी ने इतने अच्छे कर्म किये, फिर भी उन्हें रोगों से क्यों पीड़ित होना पड़ रहा है ?	131

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
72.	कोई व्यक्ति शादी करके मोक्ष को प्राप्त कर सकता है या नहीं ? राम और कृष्ण भी तो गृहस्थ ही थे। फिर उनको योगी क्यों कहा गया है ?	132
73.	क्रियात्मक-योगाभ्यास नामक पुस्तक में आया है कि बिना 'ईश्वर दर्शन' के 'अज्ञान' का नाश नहीं होगा। योगाभ्यास तथा ज्ञान के बिना ईश्वर-दर्शन संभव नहीं है। लेकिन ईश्वर के ज्ञान के पश्चात् भी कोई सूक्ष्म-अज्ञान आत्मा से लिपटा रहता है। ऐसा क्यों ?	135
74.	मिश्रित-कर्म क्या है ?	136
75.	जो मनुष्य जन्म से ही अपाहिज होता है, मंद-बुद्धि होता है। जिसका दुःख पैदा होने वाली संतान और माता-पिता दोनों को मिलता है। तो यह किसका कर्मफल है ?	137
76.	मनुष्य का जन्म पहला है कि अन्य प्राणियों का ?	138
77.	आपने कहा था कि पचास प्रतिशत पाप और पचास प्रतिशत पुण्य हैं, तो साधारण मनुष्य का जन्म मिलता है। लेकिन यदि चपरासी, मजदूर आदि के यहॉ जन्म लेने के बाद चपरासी को एक करोड़ की लॉटरीलग जाए तो, इसे क्या समझना ?	138
78.	क्या पूर्व जन्म के संस्कार से कोई चार-पॉच साल का बच्चा, पच्चीस-तीस साल के साधक जितनी योग्यता प्राप्त कर सकता है ?	139
79.	क्या मनुष्यों के अतिरिक्त कुत्ते आदि पशु-पक्षियों को भी कर्म करने की स्वतंत्रता है ? क्या इन्हें पुण्य-पाप लगता है ?	140
80.	क्या यह बात सत्य है कि अभिमन्यु मॉ के पेट में ही चक्रव्यूह के अंदर जाना सीख गया था ?	140
81.	अच्छे या बुरे कर्मों का फल अगले जन्म में ही मिलता है, इसी जन्म में क्यों नहीं मिलता ?	141
82.	संस्कार-विधि में बालक के जात-कर्म संस्कार के समय, तिथि और तिथि के देवता, नक्षत्र और नक्षत्र के देवता की आहुति का विधान किया गया है। यह भी लिखा है - गृहस्थ व्यक्ति यदि दैनिक यज्ञ नहीं कर सकता है, तो कम से कम पूर्णिमा व अमावस्या के दिन यज्ञ अवश्य करे। इन दो विशेष दिनों का क्या महत्व है ? क्या चंद्रमा का घटना और बढ़ना हमारे जीवन पर प्रभाव डालता है ?	142
83.	कर्म का फल भोगने के बाद संस्कार नष्ट हो जाते हैं या बने रहते हैं ?	143
84.	ईश्वर, मनुष्य जीवन का निर्माण क्यों करता है ?	144
85.	जीवात्मा शरीर छोड़ने के वक्त कहॉ जाता है ? और शरीर छोड़ने के	

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
	बाद उसकी स्थिति, पुर्नजन्म कैसे होता है ?	144
86.	अकाल मृत्यु हो जाती है, तो उसका जन्म कब होता है, और किस योनि में होता है ?	145
87.	वरदान या श्राप देना क्या संभव है ? नहीं, तो फिर वह क्या है ?	146
88.	'क्या योगी शक्तिपात का प्रयोग कर वेदार्थ संबंधी ज्ञान संक्रमित कर सकता है ?	147
89.	ईश्वर के द्वारा संसार बनाने से पूर्व जीव ने कर्म कहॉ किये, कर्मफल के लिये जगत् कैसे बनाया ?	148
90.	यह कैसे साबित हो कि अच्छे कार्य करने से व्यक्ति मोक्ष में जाता है ? क्या अभी तक कोई भी व्यक्ति मोक्ष में गया है ? अगर हॉ तो आपको कैसे ज्ञान हुआ कि वो व्यक्ति मोक्ष में गया है ?	149
91.	एक महिला ने अपने पति की क्रूरता एवं अत्याचार से लाचार होकर एक रात मौका देखकर उसकी हत्या कर दी। उसके अलावा उसके पास और कोई रास्ता नहीं बचा था। उसका कृत्य वेद सम्मत् है या नहीं ? यदि नहीं तो क्या उसे परमात्मा दंड देगा, जो सजा यहॉ काट ली, क्या वो कम हो जायेगी ?	151
92.	क्या मोक्ष के बाद जन्म होता है ? यदि हॉ, तो जब हमें फिर से सांसारिक दुःख उठाने पड़ेंगे तो फिर मोक्ष का लाभ ही क्या रहा ?	152
93.	आपने कहा था, हम लोग मोक्ष से धरती पर आये हैं। अगर हमें फिर मोक्ष मिले तो हमें मोक्ष में भी इस बात की भय, दुःख, चिंता लगी रहेगी कि हम कहीं वापस धरती पर न चले जाएं ?	153
94.	कोई धनी व्यक्ति जो कि गरीबों का खून चूसकर धन एकत्र करता है, यदि कोई व्यक्ति उसे लूटकर वो धन गरीबों में बॉट देता है तो क्या उसे भी ईश्वर के द्वारा दंड मिलेगा ? इन दोनों में से अधिक दंड किसको मिलेगा ?	154
95.	क्या कभी चर-अचर जीव जब मनुष्य योनि में थे, एक से अधिक बार मोक्ष भोग चुके हैं ?	155
96.	यदि मनुष्य पुरूषार्थ करता है और उसका फल नहीं मिला अथवा न्यून मिला तो दोषी कौन है, भाग्य या हम ?	157
97.	जब प्रारब्ध से किसी कर्म का फल रोग के रूप में मिलना ही है, कर्म का दंड मिला है तो उसे भोगें, रोगी बने रहें, इलाज क्यों करवाते हैं ?	158
98.	जब मनुष्य अच्छे कर्म करता है, ईश्वर की भक्ति करता है तो उसे मोक्ष प्राप्त होता है। मोक्ष के समय के बाद वो फिर जन्म लेता है और अच्छे	

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
	कर्म करता है तो भगवान का मनुष्य को बार-बार जीवन देने का क्या उद्देश्य है ?	158
99.	प्राणी मात्र को कर्म के अनुसार दुःख मिलना लिखा ही है तो फिर उनको दुःख भोगने देना चाहिए। तो ग्रंथों में ऐसा क्यों लिखा है कि प्राणी मात्र की सेवा, सहायता करनी चाहिए ?	159
100.	आपके अनुसार हमें परमात्मा का साक्षात्कार और मोक्ष की प्राप्ति करनी चाहिये, परंतु शहीद भगत सिंह और अन्य स्वतंत्रता सेनानी अगर वैराग्य वाले रास्ते पर चलते, तो क्या हमें स्वतंत्रता मिलती ?	160
101.	कृपया बुद्धि, मन के बारे में विश्लेषण कीजिये ?	163
102.	क्या मन जड़ है, उसका आकार कितना है ?	163
103.	मन बुद्धि और अहंकार क्या काम करते हैं ?	164
104.	चित्त परिवर्तनशील है। कभी सत्त्व गुण, कभी तमोगुण, कभी रजोगुण प्रधान होता रहता है। क्या खान-पान से ऐसा होता है ? कहते हैं- 'जैसा खाए अन्न, वैसा बने मन'।	166
105.	क्या 'मन' पर पड़े 'संस्कारों' के विरूद्ध भी 'आत्मा' कार्य कर सकता है ?	167
106.	आत्मा ही मन में विचार उठाती है और जीवात्मा शुद्ध-स्वरूप होती है, तो फिर मन में चोरी-व्यभिचार, हिंसा, असत्य आदि अनुचित अशुद्ध विचार क्यों आते हैं ?	168
107.	मन में आते हुए विचारों को कैसे रोकें ? संध्या, ध्यान आदि में अनेक विचारों से एकाग्रता टूट जाती है। क्या करें ?	169
108.	शरीर, आत्मा और मन इनमें क्या संबंध है ?	170
109.	'सूक्ष्म-इच्छाओं' से आपका क्या तात्पर्य है ?	171
110.	क्या सूक्ष्म-इच्छाएँ 'सब-कांशियस-माइंड' में उत्पन्न होती हैं ?	173
111.	रजोगुण से चंचलता होती है, तमोगुण से मूढ़ता होती है, तो विक्षिप्त अवस्था किस गुण से होती है ?	174
112.	क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरूद्ध मन की इन पांच अवस्थाओं को समझाने की कृपा करें ?	175
113.	मन जड़ है। इसमें क्षण-क्षण में अलग-अलग स्मृति व विचार उठते हैं और वह इधर-उधर दौड़ता है, यह कैसे ?	178
114.	'कारण-शरीर' और 'सूक्ष्म-शरीर' कैसे बनते हैं। और आत्मा के साथ इनका सम्बन्ध कब तक रहता है ?	179

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
115.	क्या कोई आत्मा अन्य आत्मा में प्रवेश कर उस जीवात्मा को प्रभावित करके सता सकता है। क्या मृत शरीर में अन्य आत्मा घुस सकता है ?	181
116.	क्या कोई व्यक्ति दूसरे के मन को नियंत्रित करके चला सकता है ? यदि हॉ, तो बिना आत्मा के प्रवेश के यह कैसे संभव है ?	184
117.	क्या हम किसी को अपने वश में कर सकते हैं ?	184
118.	मॉसाहार पाप है और लाश खाने के समान है। आजकल दुनिया में अधिकांश लोगों को ऐसा करते देखते हैं, तो क्या उनको मोक्ष प्राप्ति नहीं हो सकती ?	185
119.	क्या घर में धर्मपत्नी के साथ किया गया हवन ही ''सम्पूर्ण-यज्ञ'' कहलाता है। 'यज्ञ' करने से क्या 'लाभ' होता है ?	185
120.	यज्ञ करने से योगाभ्यास में क्या सहायता मिलती है ?	186
121.	जब मैं 'ध्यान' में बैठता हूँ तो स्तुति,प्रार्थना,उपासना करते समय 'रोना' आता है ? ऐसा क्यों होता है ?	187
122.	एक कसाई गाय को ले जा रहा है। गाय दौड़ गई और एक साधक ने देख लिया। अब गाय की जान बचानी है, तो साधक सच बोले या झूठ बोले ?	188
123.	अपने देश-धर्म के लिये झूठ बोलना पाप है या नहीं ?	190
124.	कहते हैं ''सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यमप्रियम'' ? अर्थात् सत्य बोलें, मीठा बोलें, कड़वा सत्य न बोलें। तो शंका यह है, कि क्या अपवाद रूप में 'झूठ बोलना' भी धर्म हो सकता है ?	191
125.	दूसरे को प्रसन्न करने के लिये असत्य न बोलें। किन्तु असत्य बोलने से यदि दर्द ठीक हो जाता है, तो डॉक्टर को असत्य बोलने में क्या आपत्ति है ?	192
126.	बेटा पिता पर न्यायपूर्वक क्रोध करता है, वह हिंसा है या अहिंसा है ?	196
127.	योगदर्शन में'अहिंसा' का क्या अर्थ है ?	197
128.	पाकिस्तानी हमारे जवानों को बार-बार धोखे से मारते हैं, क्या हमें उनको नहीं मारना चाहिए ? मारना हिंसा है, तो क्या करे ?	197
129.	कृषि करने के दौरान केंचुआ आदि छोटे जीवों की मृत्यु हो जाती है। फिर हम हिंसावादी हुए कि नहीं ?	198
130.	रोग दूर करने और स्वच्छता के लिए आज कीटनाशक दवाओं का इस्तेमाल अनिवार्य हो गया है, क्या ऐसा करना भी हिंसा करना होगा ?	198
131.	हमें किस सीमा तक सहनशील होना चाहिऐ और कब प्रतिकार करना चाहिए ? यदि कोई माता-पिता का अपमान करे तो क्या सहन करना	

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
	उचित होगा ?	199
132.	आयुर्वेद में लिखा है, कि 'मांस खिलाओ और वह वैद्य मॉस खिलाये, तो क्या उसको पाप नहीं लगेगा।'	200
133.	विपरीत व्यक्ति के साथ कब तक संयमित व्यवहार करें ? वह भी घर का ही सदस्य हो तो ?	201
134.	दुष्ट-प्रकृति के लोग हमारे साथ हिंसा कर दें, तो किस-किस अवस्था में हम कैसा-कैसा व्यवहार करें ?	202
135.	एक की जमीन पर दूसरा ताकतवर होने के नाते कब्जा कर ले। तो क्या साधक वही तीन शब्द कहकर छोड़ दें कि 'कोई बात नहीं', अथवा फिर क्या करें ?	205
136.	कीट, पतंग, मच्छर को लार्बा-ट्रीटमेन्ट से विनिष्ट करते हैं। यह कर्म करना चाहिये या नहीं, और इस कर्म का फल क्या होगा ?	206
137.	एक व्यक्ति किसी डेढ़ साल की बच्ची के साथ बलात्कार कर जान से मार देता है। वो पकड़ा जाता है। जज उसकी सजा फांसी के रूप में देता है। यह हिंसा है या अहिंसा ?	207
138.	राजनीतिज्ञों की अहिंसा किस कोटि में रखनी चाहिए ?	208
139.	हम लोग बेल्ट, जूता, चप्पल आदि चमड़े से बनी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं, तो क्या ये अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा है ?	209
140.	तेजो असि तेजो महि धेही'। इस मंत्र में हमने ईश्वर से क्रोध की और सहन-शक्ति की भी प्रार्थना की है। दोनों मुझे विरूद्धार्थी लगते हैं ?	210
141.	कृपया द्वेष के पर्यायवाची बतलायें। द्वेष का अर्थ, बुरा लगना, अच्छा न लगना, घृणा करना, विरोधी समझना, गलत भावना बना लेना, क्या ठीक है ?	212
142.	मुझे गुस्सा बहुत आता है। कृपया उपाय बतलायें ?	213
143.	वृक्ष में जीवन है या नहीं है ? क्या वनस्पति में आत्मा होती है ?	214
144.	क्या वृक्षों में ज्ञान भी होता है ?	214
145.	किसी ने वृक्ष को योनि माना है और किसी ने नहीं माना है, इसमें से कौन सा पक्ष सत्य है ?	215
146.	वृक्ष में भी आत्मा है तो वनस्पति खाना, प्रयोग में लाना ठीक नहीं है, उसे हम किस अधिकार से दण्डित करें ?	216
147.	'वृक्षों' के अंदर 'जीवात्मा' कहॉ रहता है ?	217

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
148.	मृत्यु से भय क्यों लगता है ?	218
149.	मैं नेत्रहीन हूँ, पर स्वप्न क्यों आते हैं ?	219
150.	जीवात्मा का स्वरूप क्या है ? क्या जीवात्मा निराकार है ?	219
151.	आत्मा का क्या परिमाण है ?	220
152.	'आत्मा' अणु के बराबर होती है जबकि चेतना हमारे सारे शरीर में व्याप्त है ?	221
153.	क्या सृष्टि के आदि में जितनी आत्मायें थी, उतनी ही आज हैं अथवा कम या ज्यादा होती रहती हैं ?	222
154.	यदि मन जड़ है, तो 'मन' बंधन और 'मोक्ष' का कारण कैसे है ?	222
155.	श्रीराम ने बाली का वध छुपकर के किया। छुपकर के दुश्मन को मारना या किसी को मारना, यह तो गद्दारी है। ऐसा कुछ लोग कहते हैं ?	223
156.	हमारा ज्ञान सत्य है, या नहीं। यह जानने के लिये अपने ज्ञान की तुलना किसके ज्ञान के साथ करनी चाहिये ?	224
157.	जहॉ अपना अनुभव काम नहीं कर पा रहा हो, स्थिति डावॉडोल हो रही हो, तब योगाभ्यासी किसके आधार पर दृढ होता है ?	225
158.	योगाभ्यास को कष्ट न समझकर करें, तो क्या उसमें सफलता मिल सकती है ?	225
159.	क्या हजारों वैज्ञानिकों की तुलना में एक ब्रह्मवेत्ता द्वारा संसार का उपकार अधिक होता है ?	226
160.	क्या व्यक्ति को बुरे कर्म करने के पश्चात अन्य सभी योनियों को भोगना पड़ेगा अथवा कुछ योनियों के पश्चात् वापस मानव जन्म मिलेगा ?	227
161.	वेद के होते हुए भी 'गीता' का उपदेश देने का क्या प्रयोजन है ?	228
162.	जब ध्यान में बैठा जाये, तो क्या देखने का प्रयत्न किया जाये। अंधकार, प्रकाश, ओम, प्रतीक या कुछ और ?	230
163.	मोक्ष में जीवात्मा आनंद का अनुभव कैसे करता है। क्या वह समझता है, कि आनंद प्राप्त कर रहा है ?	231
164.	किसी ने चोरी की और भगवान ने नहीं देखा। क्या यह हो सकता है ?	231
165.	पूरा प्रयास करने पर कितने सालों में या एक जन्म में मोक्ष पा सकते हैं ?	232
166.	जो संन्यासी होते हैं, उनका मुख्य लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना अथवा समाधि प्राप्त करना होता है। एक योगाभ्यासी बनने के लिये हमें लोभ, मोह, लालच नहीं करना चाहिये। सवाल उठता है, कि क्या ईश्वर को	

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
	प्राप्त करना लोभ, मोह, लालच नहीं है ?	232
167.	मोक्ष की इच्छा एक कामना है, मोक्ष की कामना से किया हुआ निष्काम कम सकाम हो सकता है ?	234
168.	जीवात्मा भविष्य में जो विचार करेंगे, उसका ज्ञान ईश्वर को पहले से हो सकता है या नहीं ?	235
169.	हम अध्यापक हैं, और हमारे विद्यार्थी बार-बार कहने पर भी मानते नहीं, तो हमें गुस्सा आता है। क्या यह सही है ?	236
170.	स्वार्थ की व्याख्या करें ? कृपया तीन-चार व्यावहारिक उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ?	237
171.	मोक्ष में आत्मा के साथ में मन, बुद्धि, चित्त, कारण शरीर आदि रहते हैं या नहीं ?	238
172.	समाधि की प्राप्ति में गुरू का कितना सहयोग चाहिये ?	239
173.	ईश्वर ने सृष्टि बनाई, यह कैसे सिद्ध करें ?	239
174.	कृपया गुणकर्म स्वभाव की परिभाषाएँ बतलाइए। तीनों में क्या भेद है ? ईश्वर के गुण-कर्म स्वभाव अलग-अलग बताइए। क्योंकि इनके ओवरलेपिंग होने के कारण कन्फ्यूजन रहता है ?	241
175.	समाधि लगने पर अर्न्तज्ञान प्राप्त होता है। ऋषि-काल में ऋषि लोग अर्न्तज्ञान से कैसा जानते थे ?	243
176.	ईश्वर निराकार है, तो योग द्वारा ईश्वर का किस रूप में साक्षात्कार होता है ?	244
177.	वेद की उत्पत्ति कैसे हुई ?	245
178.	ईश्वर ने मनुष्य को कैसा रूप धारण करके ज्ञान दिया, मनुष्य रूप से या आकाशवाणी से। कृपया समाधान किया जाए ?	246
179.	चारों युग की गणना कीजिए ?	247
180.	जीवात्मा एक शरीर को छोड़ दे, तो दूसरे शरीर में जाने के लिए उसको कितना समय लगता है ?	247
181.	'जीवात्मा' का स्थान मनुष्य 'शरीर' के अंदर कहाँ है ?	248
182.	आत्मा के संयोग से 'जड़-शरीर' चेतन लगता है। 'चेतन-ईश्वर' जड़ पदार्थों, जैसे कि- दीवार, पत्थर आदि में है, तो ये चेतन क्यों नहीं दिखते ?	249
183.	आदिकाल से सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय होता चला आ रहा है, तो	

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
	क्या इससे यह मान सकते हैं कि उत्पत्ति व प्रलय का जो क्रम है, कभी उसकी शुरूआत हुई होगी, और इसका अन्त भी आएगा, क्योंकि हर कार्य की शुरूआत और अन्त होता है ?	250
184.	सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम पालन में स्वतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें। इस नियम का क्या अर्थ है ?	251
185.	पुरुषार्थ-चतुष्ट्य में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है। इसमें 'काम' से क्या अभिप्राय है। क्या मोक्ष की प्राप्ति हेतु प्रारंभ के तीन पुरूषार्थ साधने आवश्यक हैं ?	252
186.	द्रोपदी का चीरहरण चुपचाप देखते रहना, क्या भीष्म पितामह जैसे महान व्यक्ति की कमजोरी नहीं दर्शाता ? कहा जाता है, कि कौरवों का अन्न खाने से उनकी बुद्धि मलीन हो गई थी। हम भी इतना दूषित भोजन खाते हैं, तो क्या हमारी बुद्धि भी मलीन हो गई है। फिर योग धर्म कैसे असर करेगा ?	253
187.	''जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन। जैसा पिये पानी, वैसी बने वाणी। जैसा करे संग, वैसा चढ़े रंग।'' तो मित्रों के, रिश्तेदारों आदि के घर में भ्रष्टाचार का धन आता है और वहाँ जाना ही होता है। वहाँ का अन्न, पानी ग्रहण न करने पर संबंध बिगड़ते हैं। और यदि स्वीकार करेंगे, तो मन बिगड़ेगा। बताइये क्या करना चाहिये ?	255
188.	आप कहते हैं, कि क्रोध नहीं आना चाहिए। परशुराम, द्रोणाचार्य जैसे तपस्वी लोग क्रोधी थे फिर भी दुनिया उनकी पूजा क्यों करती है ?	256
189.	यदि मांसाहार का निषेध कर दिया जाये, तो मांस पर निर्भर लोगों की रोजी-रोटी का क्या प्रबंध है। वो क्या करेंगे ?	256
190.	भारत में महिला और पुरुष दोनों को समान दर्जा प्राप्त है। लेकिन विवाह के बाद महिलाओं के पास मंगलसूत्र और सिंदूर रहता है। वो उनकी विवाहित होने की पहचान है। लेकिन विवाहित पुरूषों की क्या पहचान है ?	258
191.	आपने कहा, ईश्वर निराकार है। परछाई (प्रतिबिंब) का आकार दिखता तो है, लेकिन परछाई, (प्रतिबिंब) पकड़ नहीं सकते ? फिर हम निराकार ईश्वर को कैसे पकड़ेंगे ?	258
192.	ईश्वर को पाने के लिए क्या यह आवश्यक है कि संध्या, उपासना आदि संस्कृत में बोलकर की जाये। अब अगर वेद हिन्दी में लिखे गये हैं, तो मंत्र भी हिन्दी में होंगे। इसलिए संध्या उपासना भी क्या हिन्दी में की जा सकती है ?	259

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
193.	ईश्वर, उपासना करना कठिन लगता है। जबकि हम दिनभर मन में सांसारिक बातें खूब सोचते हैं। वह सरल लगता है। ऐसा क्यों है?	260
194.	जब हम वैदिक गणना के अनुसार इस संसार की आयु एक अरब 96 करोड़, इतना वर्ष कहते हैं, तो यह गणना हमारी पृथ्वी अर्थात् सौरमंडल की है अथवा समस्त दृश्य-अदृश्य ब्रह्माण्ड की?	261
195.	सृष्टि केवल एक है या बहुत सारी हैं?	261
196.	मोक्ष की अवस्था में जीवात्मा को देखने, सुनने आदि के लिए, नेत्र, श्रोत्र बिना शरीर कैसे मिलते हैं?	262
197.	जब संसार प्रलय-अवस्था में चला जाता है, तब परमात्मा कुछ करता है या निठल्ला बैठा रहता है?	262
198.	मुण्डकोपनिषद् के एक श्लोक में ओ३म् को धनुष, आत्मा को तीर और ब्रह्म को लक्ष्य बताया गया है। कृपया इसे स्पष्ट करें?	263
199.	किसी को मारना जीव-हत्या कहलाती है। कीड़े, मच्छर, मक्खियॉ जानबूझकर या अनजाने में मारे जाते हैं, तो क्या ये भी जीव-हत्या कही जाएगी?	263
200.	क्या ब्रह्माण्ड में इस दुनिया के अलावा कहीं और भी ऐसी दुनिया है, जैसी इस पृथ्वी पर है?	264
201.	क्या ईश्वर दयालु है और हम सबका भला चाहता है, तो उसने जीव को काम करने में स्वतंत्र क्यों बनाया? उसने सभी को सुबुद्धि क्यों नहीं दी, ताकि कोई बुरा काम कर ही न सके?	265
202.	क्या गीता का उपदेश भगवान श्री कृष्ण का है। यदि है, तो युद्ध स्थल में इतना अठारह अध्यायों का उपदेश कैसे संभव है?	267
203.	ईश्वर और जीव दोनों चेतन हैं। जीव में इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, क्रिया, सुख -दुःख आदि गुण हैं, क्या ईश्वर में भी ये गुण होते हैं?	268
204.	मृत्यु के उपरांत मस्तिष्क भस्म हो जाता है, हृदय भी भस्म हो जाता है, फिर इसमें संस्कार कैसे संचित रह सकते हैं?	270
205.	किस प्रकार के कर्मों के आधार पर स्त्री या पुरूष का जन्म मिलता है?	271
206.	जैसे कार आदि जड़ वस्तु और ऑख, हाथ आदि अपने जड़ अंगों को एक बार नियंत्रित करने पर, वो पर्याप्त समय तक नियंत्रित रहते हैं। परंतु मन, जो कि जड़ है, उसको एक बार नियंत्रित करने पर भी वो बार -बार अनियंत्रित होकर हमारे ध्यान में बाधा डालता ही रहता है, ऐसा क्यों? कृपा करके समझा दें?	272
207.	जब शरीर जड़ है, तो इसकी पीड़ा हमें क्यों होती है?	274

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
208.	जीवात्मा निराकार है या साकार ? इस प्रश्न के उत्तर में आपने जीवात्मा को निराकार बतलाया था और कहा था कि वो चेतन है। जो चेतन होता है, वो निराकार होता है और जो जड़ होता है वो साकार होता है। अब प्रश्न बना कि ईश्वर निराकार होने से एक है, परंतु जीवात्मा निराकार होने से अनेक क्यों है ? क्या कठोपनिषद् के आचार्य ने जीवात्मा को आकारवान माना है ?	275
209.	ध्यान करते समय किस चीज या आकृति का मन में ध्यान किया जाये ? उस चीज को या नाम को या भगवान का कहॉ पर ध्यान लगाया जाये। उसका स्थान और उसका स्वरूप बताने की कृपा करें तथा किस आसन में तथा किस समय ध्यान किया जाये ?	277
210.	क्या कुसंस्कार से आत्मा दबता है ?	279
211.	क्या जब हम समाधि अवस्था प्राप्त करें तब ही ईश्वर का अनुभव होगा ?	280
212.	मुझे पता है कि ईश्वर सर्वव्यापक और निराकार हैं और वही हमारे वास्तविक माता-पिता, पालक-पोषक और रक्षक हैं। फिर भी मैं ईश्वर को अपने माता-पिता की तरह प्रेम नहीं कर सकती। क्या करना चाहिये, जिससे मैं परमपिता परमात्मा को माता-पिता की तरह प्रेम कर सकूँ ?	281
213.	अनेकता में एकता कैसे हो सकती है ?	283
214.	क्या गंगा आदि नदियों मृत व्यक्ति की अस्थियॉ विसर्जन करने में जाना उचित नहीं है ? यदि नहीं, तो फिर उन अस्थियॉ का क्या करें ?	284
215.	क्या जन्म-दिवस (बर्थ डे) मनाना चाहिये ?	284
216.	चिंतन क्या है और यह कैसे किया जाता है। उसके लिये क्या-क्या चीजें आवश्यक हैं ?	285
217.	श्रेष्ठ पुरूषों की संकट से ईश्वर तत्काल रक्षा करता है, या कुछ और है ?	287
218.	संस्कार-दोष और इन्द्रिय-दोष में क्या अंतर है ?	287
219.	"दण्ड देते समय वाणी में क्रोध लाना पड़े तो लाएँ, किन्तु मन में क्रोध न लाएँ"-ऐसा करना अहिंसा है, ऐसा आपने बतलाया, किन्तु ये असत्य है, क्योंकि मन और वचन की एकरूपता नहीं रही ?	288
220.	आपने कहा था कि ईश्वर का रंग, रुप आकार कुछ नहीं है। तो ध्यान करते समय निराकार ईश्वर का ध्यान कैसे करें ?	290
221.	हर नया कर्म करते समय मन में पहले शंका उत्पन्न होती है और उसके साथ बाद में भय भी उत्पन्न होता है। ऐसा क्यों ?	291
222.	योग में मन के सभी विचारों को पूरी तरह से नहीं रोक पाते हैं तो क्या	

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
	उन विचारों को रोककर दूसरी ओर लगाना है। मार्गदर्शन कीजिए?	292
223.	ऐसा हम सुनते हैं, कि- सत्य आचरण करने वालों से ईश्वर प्रसन्न होता है। किन्तु देखा गया है कि असामाजिक तत्त्व, असत्य आचरण करने वाले लोग ज्यादा सुखी हैं। आध्यात्मिक सत्य आचरण करने वाले लोगों को कष्ट अधिक सहन करना पड़ता है। ऐसे समय में ईश्वर के अस्तित्त्व पर संदेह हो जाता है। मोक्ष मिलेगा, जब मिलेगा, तब मिलेगा। लेकिन आज तो भगवान के न्याय कार्य के ऊपर से विश्वास उठ जाता है। कृपया इस स्थिति पर मार्गदर्शन करें?	292
224.	लोग कहते हैं कि आत्मा ही परमात्मा है। और वही लोग कहते हैं, कि ईश्वर एक है। तो जब ईश्वर एक है, तो आत्मा में कैसे आ सकता है? आत्मा तो अनेक हैं। तो आत्मा, परमात्मा कैसे हैं, क्या परमात्मा खंडित-खंडित है?	295
225.	एक समय में एक ही प्रकार का प्राणायाम करना चाहिए। जैसे बाह्य प्राणायाम या आभ्यन्तर-प्राणायाम। दो या तीन प्रकार के प्राणायाम एक साथ क्यों नहीं करना चाहिए। क्या ऐसा करने से कोई हानि है?	296
226.	मन एक जड़ पदार्थ है । तो मन, शरीर में किस जगह पर रहता है, और मन को कैसे पकड़ा जाए?	296
227.	इस जन्म में मांस और शराब बुरा समझते हुऐ हम नहीं खाते हैं या इन्हें बुरा मानकर खाना छोड़ दिया है। अगले जन्म में खाना-पीना नहीं चाहते, क्या ऐसा होगा?	297
228.	हमारे देश में मूर्ति-पूजा कब से शुरू हुई? हम यदि मूर्ति-पूजा नहीं करते है लेकिन साथ के अन्य लोग कर रहे हैं, तो उनके साथ कैसे रहें?	298
229.	व्याप्य-व्यापक संबंध का अर्थ समझने में आया। पर उसकी अनुभूति नहीं होती। इसके लिए क्या करना चाहिए?	300
230.	वास्तविक मृत्यु ईश्वर द्वारा लिखी जाती है, जो कि सौ वर्ष से कम नहीं है। क्या इससे कम जीवन देकर ईश्वर जीव को संसार में नहीं भेजता?	301
231.	परमात्मा और जीव को पदार्थ क्यों कहा है, जबकि ये दोनों चेतन स्वरूप हैं, जड़ नहीं?	302
232.	हिंसक प्राणियों सॉप, बिच्छु, चींटी, काकरोच आदि के साथ कैसा व्यवहार करें?	303
233.	'वेद' ईश्वर की वाणी है। ईश्वर ने इसके निर्माण में कैसे सहायता की?	304
234.	शास्त्रों के आधार पर प्रेम का अर्थ क्या होता है, क्या प्रेम और राग एक ही हैं या उसमें अंतर है?	306
235.	वेद में विज्ञान है। लेकिन वेद पढ़े बिना कुछ देश या लोग वैज्ञानिक उन्नति कर रहे हैं, तो वेद पढ़ने की वैज्ञानिक दृष्टि से क्या आवश्यकता है?	307
236.	मनुष्य श्रेष्ठ है, ऐसा शास्त्र कहता है पर जो हिंसा चोरी आदि बुरे काम करते हैं, उन्हें अच्छे-बुरे का पता नहीं चलता। उनके लिए क्या उपाय है?	308
237.	सृष्टि की शुरुआत में लोगों की भाषा कौन सी थी?	310
238.	ईश्वर ने मांसाहारी योनियॉ क्यों बनाई? उन्हें इतना बलवान भी क्यों बनाया? उन्हें बलवान बनाकर क्या ईश्वर ने अत्याचारी का साथ देने के बराबर काम नहीं किया?	310
239.	आज वैज्ञानिकों ने जो 'क्लोन' बनाया है, क्या वो वैदिक-सिद्धांत के अनुकूल है?	311
240.	समाधि अवस्था क्या है? हमने सुना है बहुत सारे संत 'समाधि अवस्था' में भगवान के पास गए। यह कैसे संभव है ?	312
241.	मृत शरीर को वैदिक धर्मानुसार जलाते हैं। कुछ वैज्ञानिक कहते है कि शरीर को गाड़ने से जमीन में अच्छी फसल तैयार होती है और लकड़ी जो महंगी है, वो बच जाती है। कृपया इसकी विस्तृत जानकारी दें?	312
242.	साठ वर्ष का पिता रिटायर्ड फौजी है। शराब की आदत है। सारी पेन्शन शराब में उड़ा देता है। क्या शराब छुड़ाने का कोई उपाय है?	313
243.	दस वर्ष के लड़के-लड़की ठीक से भोजन नहीं करते। इस तरह के बच्चों का मन ईश्वर में लगाने के लिये उन्हें कैसी शिक्षा दी जाये?	314
244.	जब हम शिविर इत्यादि में आते हैं। तब सब कुछ अच्छा लगता है। क्रोध कम हो जाता है। लेकिन जब हम वापस सांसारिक-जीवन में जाते हैं, तो ऐसे नहीं जी पाते, क्या करें?	315
245.	क्या किसी भी धर्म, पंथ या देवी-देवता का मजाक उड़ाकर हम अपने आपको श्रेष्ठ कहलवा सकते हैं?	316
246.	हमने सुना है, मुक्त आत्मायें आपस में बातें करती हैं। लेकिन वे स्थूल शरीर के बिना कैसे बातें कर सकती हैं?	317
247.	रात्रि को केवल ढ़ाई-तीन घंटे नींद आती है। खाना, बिस्तर ठीक है। क्या तीन घंटे की नींद काफी है?	317
248.	मेरा पड़ोसी प्रायः हर रोज बच्चों को भेजकर साइकिल, प्रेस, पंप, तेल, हल्दी, जीरा, कुकर आदि हमारे घर से मंगवाता है? अब मना करें, तो संबंध खराब होने का डर; और झूठ बोलकर मना करें, तो ईश्वर का डर; और दे दें, तो अंदर मन में दुःख; बताइये क्या करें?	318

प्र.संख्या	विषय	पृष्ठ
249.	बौद्धिक स्तर पर किसी भी जीव का या आकृति का पोस्टमार्टम कैसे किया जाता है, ताकि आकर्षण खत्म हो जाये ?	319
250.	मानव जीवन की सबसे बड़ी भूल कौन सी है ?	319
251.	कर्म का फल भोगने के बाद संस्कार नष्ट हो जाते हैं या बने रहते हैं ?	320
252.	कृपया उपासना शब्द के अर्थ को ठीक से स्पष्ट करके समझाइये ?	321
253.	पन्द्रह साल का लड़का यदि दुष्ट व्यसन में पड़ जाये तो उसे कैसे सुधारा जा सकता है ? कृपया विस्तार से बतलायें ?	322
254.	घर के बच्चे कैसे बिगड़ते हैं ?	330
255.	जीवात्मा को जीने की उत्कट इच्छा क्यों होती है ? अथवा जीवात्मा को जीने के लिये कौन सा तत्त्व प्रेरित करता है ?	335
256.	जीवात्मा शरीर छोड़ने के वक्त कहाँ जाता है ? और शरीर छोड़ने के बाद उसकी स्थिति, पुर्नजन्म कैसे होता है ?	336
257.	'कठोर' शब्द का क्या अर्थ है ? कठोर शब्द का प्रयोग कब करना चाहिए ?	337
258.	ईश्वर को ज्ञान से जानते हैं। और यह ईश्वर-ज्ञान सबके बस की बात नहीं है, तो क्या ईश्वर को जाने बिना केवल अच्छे कर्म करने से 'मोक्ष' की प्राप्ति की जा सकती है ?	338
259.	'ओ३म्' का उच्चारण किस जगह और कितने समय पर किया जाना चाहिए। इसमें दिन और रात देखे जाते हैं या नहीं ?	338
260.	'प्रणव' का अर्थ क्या है ?	339
261.	क्या मनुष्यों के अतिरिक्त कुत्ते आदि पशु-पक्षियों को भी कर्म करने की स्वतंत्रता है ? क्या इन्हें पुण्य पाप लगता है ?	340
262.	'ईश्वर' पहले से है। 'आत्मा' को किसने बनाया ?	341
263.	ईश्वर कब और क्या-क्या सहायता देता है, और क्या-क्या नहीं देता ?	341

संक्षिप्त परिचय

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक दर्शनाचार्य, (योग विशारद)

अध्ययन :

पूज्य स्वामी श्री सत्यपति जी परिव्राजक से योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त और मीमांसा दर्शन, 11 उपनिषदों; (ईश, केन, कठ आदि) का अध्ययन किया। ऋग्वेद और यजुर्वेद का कुछ अध्ययन किया।

वर्तमान कार्य :

1. **अध्यापन :** दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, साबरकांठा, गुजरात में उपाध्याय के पद पर सन् 1988 से 2011 तक तथा अप्रैल 2011 से निदेशक पद पर कार्यरत है। वहाँ दर्शन, उपनिषद एवं वेदादि शास्त्रों का अध्यापन करते हैं और महर्षि पतंजलि जी के द्वारा बताए गए अष्टांग योग का क्रियात्मक रूप से प्रशिक्षण देते हैं।
2. **वेद प्रचार कार्य :** देश भर में प्रतिवर्ष प्रवचन एवं शिविरों के माध्यम से वैदिक योग विद्या का प्रचार प्रसार करते हैं। कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, व्यापारिक- औद्योगिक- प्रतिष्ठानों, क्लबों, छात्रालयों, न्यायालयों, वैज्ञानिकों, डॉक्टरों उच्च तथा सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों आदि बुद्धिजीवियों में और गुजरात विधानसभा सचिवालय के एवं संसद भवन, दिल्ली सचिवालय के अधिकारियों आदि में विशेष रूप से मानव धर्म का प्रचार करते हैं।
3. **शास्त्रार्थ :** 8 मार्च 2005 को दिल्ली के रामलीला मैदान में शिवरात्रि के अवसर पर शास्त्रार्थ किया। विषय था- "काल अकाल मृत्यु"। 19 नवम्बर 2006 को दिल्ली में आर्य समाज अनारकली में शास्त्रार्थ हुआ। विषय था-"ईश्वर अवतार लेता है या नहीं"। दोनों शास्त्रार्थों में स्वामी विवेकानन्द जी का पक्ष प्रबल रहा।
4. **शंका-समाधान :** अक्टूबर 2006 में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में एक अलग विशेष मंच पर 3 दिनों में लगभग 8 घण्टे तक विशेष कार्यक्रम में देश-विदेश के श्रोताओं ने सैकड़ों प्रकार के आध्यात्मिक तथा दार्शनिक प्रश्नों का समाधान प्राप्त किया। अक्टूबर 2012 के दिल्ली वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में एक अलग मंच पर 4 दिनों में लगभग 11 घण्टे तक देश-विदेश के जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान किया और जिज्ञासुओं को अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त करके बहुत सन्तोष हुआ। स्वामी जी आध्यात्मिक शंका समाधान के विशेषज्ञ हैं।

विदेश प्रचार यात्रा : नेपाल और इंग्लैण्ड।

लेखन कार्य : तत्त्वज्ञान, दु:ख कारण और निवारण आदि पुस्तिकाएँ, क्रोध को कैसे दूर करें, सत्य बोलने से लाभ, दर्शन-सार आदि पत्रक, विभिन्न पत्रिकाओं में योग और अध्यात्म सम्बन्धी लेख।

जीवन प्रसंग

1. बाल्यकाल से ही दैनिक यज्ञ, सन्ध्या, स्वाध्याय-सत्संग आर्य समाज में जाना, विद्वानों की सेवा करना इत्यादि। प्रातः यज्ञ के बिना नाश्ता नहीं। सायं सन्ध्या के बिना भोजन नहीं। ऐसा नियम घर पर था।

2. बाल्यकाल से ही वेदपाठ-प्रतियोगिता, गीत-प्रतियोगिता, भाषण-प्रतियोगिता आदि में भाग लेना और लगभग सर्वत्र प्रथम/द्वितीय आदि पुरस्कार प्राप्त करना।

3. घर में रहते हुए नागरिक स्कूली शिक्षा होते हुए भी लगभग गुरूकुलीय दिनचर्या बाल्यकाल से ही रही। जैसे प्रातः 5 बजे जागरण, रात्रि 10 बजे शयन इत्यादि।

4. लगभग 10 वर्ष की आयु से लेकर 18-19 वर्ष की आयु तक लगातार 101 बार सम्पूर्ण यजुर्वेद के मन्त्रों से यज्ञ किया। 3-4 बार चारों वेदों का सम्पूर्ण मन्त्र-पाठ किया।

संस्कारी परिवार :

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक के परिवार में 7 व्यक्तियों ने गृह त्याग किया। जिनमें से 4 संन्यासी बने और 3 वानप्रस्थी। एक ही परिवार के 7 व्यक्तियों ने पीढ़ी दर पीढ़ी वैदिक विद्वान बनकर वेद प्रचार किया, यह एक ऐतिहासिक और प्रेरक तथ्य है।

पुरस्कार एवं सम्मान :

(क) सन् 2004 में "डॉ. मुमुक्षु आर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति पुरस्कार" परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर प्राप्त हुआ।

(ख) 20 अप्रैल 2008 को "स्वामी सत्यानन्द स्मृति पुरस्कार", बयाना नगर, राजस्थान से प्राप्त।

(ग) 15 जून 2008 को "वैदिक प्रचार प्रसार सम्मान", आर्य समाज भुज, कच्छ, गुजरात से प्राप्त।

(घ) 8 नवम्बर 2008 को ऋषि मेले के अवसर पर "आर्य विद्वान् (दर्शन) सम्मान" परोपकारिणी सभा अजमेर, राजस्थान से प्राप्त।

(ङ) गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से 13 सितम्बर 2009 को गाँधीनगर, गुजरात में "वेद दर्शन प्रचारक संन्यासी" सम्मान प्राप्त।

...

शंका समाधान कर्ता की ओर से स्पष्टीकरण

इस पुस्तक में मुझसे ध्यान-योग शिविरों में श्रोताओं द्वारा पूछी गयी शंकाओं के समाधान हैं। शंकाओं में शब्दावली लगभग यूँ की यूँ रखी गई है, एकाध जगह पर कुछ शब्दों में प्रश्न के स्पष्टीकरण के लिए भले ही कोई शब्द बदला हो। समाधान में भी वही भाषा छापी गयी है, जो शिविर में शंका-समाधान के लिए बोली (रिकार्ड की) गई थी।

जब व्यक्ति सामने बैठा हो तो कुछ उसके स्तर की भाषा बोलनी पड़ती है। जब उसे पुस्तक रूप दिया जाता है, तो कुछ अलग स्थिति होती है। इसलिए बोलने और लिखने में अंतर आ जाता है। फिर भी शंकाओं के जो समाधान किये गए हैं, उनको छापते समय भी हमने भाषा में कहीं कुछ थोड़ा बहुत अंतर किया है, जो कि विषय को समझने की दृष्टि से आवश्यक था।

वैसे तो मैं हिन्दी ही बोलने की प्रेरणा देता हूँ। परन्तु जिन लोगों में मैं काम करता हूँ, वे लोग शुद्ध हिंदी समझते नहीं हैं। इसलिए मैं भी इसी खिचड़ी भाषा का प्रयोग अधिक करता हूँ। हाँ, जहाँ मुझे हिंदी, संस्कृत समझने वाले और बोलने वाले मिलते हैं, वहाँ पर मैं शुद्ध हिंदी, संस्कृत में भी बात करता हूँ, परन्तु यह शंका-समाधान का कार्यक्रम क्योंकि सामान्य लोगों में हुआ था, इसलिए इसकी भाषा भी वही खिचड़ी है।

संपादक श्री (डॉ). राधावल्लभ चौधरी के द्वारा भी विषय को और अधिक सरल तथा जनसामान्य की समझ के अनुरूप बनाने के लिए पुस्तक की भाषा में और प्रस्तुतिकरण में थोड़ा बदलाव किया है।

भाषा अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाने का एक माध्यम है। यदि श्रोता मेरी भाषा को समझता ही नहीं है, तो मेरा बोलना व्यर्थ समय नष्ट करना है। यह श्रोताओं के साथ अन्याय है। इसलिए श्रोता जिस भाषा को समझता हूँ, मैं वही भाषा बोलने का प्रयास करता हूँ। जब श्रोता मेरी बात समझ कर लाभ उठा लेता है, तो मुझे अपना परिश्रम भी सार्थक लगता है। इसलिए मैंने इन समाधानों में खिचड़ी भाषा का प्रयोग किया है।

दूसरी बात, मैं एक ईमानदार योगाभ्यासी हूँ, यम-नियमों का पालन श्रद्धापूर्वक करता हूँ, मैं कोई सर्वज्ञ नहीं हूँ,। इसलिए मेरे द्वारा किये गए समाधानों में यदि अल्पज्ञता से कहीं कोई भूल रह गई हो और वह मुझे समझ में आ जाएगी, तो मैं उसे दूर करने का प्रयत्न करूँगा। शेष इन समाधानों में जो बातें मैंने कही या बताई हैं, वे सब वेद आदि शास्त्रों के आधार पर प्रमाणिक हैं। आशा है, बुद्धिमान लोग इन समाधानों से लाभ उठाएँगे और दुःखों से छूट कर सुख की प्राप्ति करने का प्रयत्न करेंगे।

आपका शुभचिंतक

स्वामी विवेकानंद परिव्राजक

मेरे अपने भाव

करीब पन्द्रह वर्ष पूर्व जब मैं अपने कहे जाने वाले लोगों की उपेक्षा, तिरस्कार, परिचितों के विश्वासघात और अपनी अज्ञानता, अयोग्यता, विपन्नता और रोगों से पीड़ित होकर दुःख और निराशा के गहरे समुन्दर में गोते लगाता हुआ इनसे पीछा छुड़ाने का असफल प्रयत्न कर रहा था कि तभी प्रभु कृपा से परम कारुणिक आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी का मुझे सहारा मिला। उन्होंने मुझे दर्शन योग महाविद्यालय में डेढ़ माह अपने सान्निध्य में रहने की अनुमति दी। इस दौरान मैं जैसे-जैसे महाविद्यालय के नियमानुसार सुबह चार बजे जागरण, स्नान, व्यायाम, ध्यान, यज्ञ, स्वाध्याय, सत्संग आदि नियमित दिनचर्या के अंगो का पालन करता चला गया, दुःखद स्मृति, चिंता, अज्ञानता, अयोग्यता और रोग घटते चले गए तथा सहनशीलता, सुख, शांति, एकाग्रता, बुद्धि, स्मृति, ज्ञान और वैराग्य बढ़ते चले गए, शारीरिक उन्नति भी होती चली गई। इसके बाद तो साल में एक बार एक-दो माह विद्यालय में ही रहने का नियम बना लिया।

मैं सोचता था कि कितना अच्छा होता कि जो लोग यहॉ नहीं आ पाते हैं, उन्हे भी यह लाभ मिलता। उन्हे भी संसार की वास्तविकता का ज्ञान मिल सके ताकि वे भी अपने को दुःखी होने से बचा सकें और मस्ती से अपनी जिन्दगी को जी सकें। मैं पूज्य स्वामी विवेकानंद जी का हमेशा आभारी रहूँगा, जो उन्होंने मेरे द्वारा संपादित शंका समाधान विषयक प्रवचनों को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने की अनुमति दी। श्रद्धालुजन धर्म प्रचार के इस कार्य की गति को तीव्र करने हेतु अपनी सामर्थ्यानुसार विद्यालय को सहयोग कर पुण्य-लाभ अर्जित कर सकते हैं।

पुस्तक निर्माण में सहयोग प्रदान करने वाले सभी लोगों का मैं आभारी हूँ। उत्कृष्ट शंका-समाधान के तीनों भागों को एक ही पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। प्रस्तुत पुस्तक में कोई त्रुटि हो गई हो तो पाठकगण मुझे अवगत कराने का उपकार करने की कृपा करें, ताकि अगले संस्करण में उसे शुद्ध किया जा सके।

दिनांक 15 जुलाई, 2012

संपादक

डॉ राधावल्लभ चौधरी

मो. 094243 06170

E-mail: cdrradhavallabh@yahoo.in

॥ ओ३म् ॥

उत्कृष्ट शंका-समाधान

1. शंका- 'शंका-समाधान' क्या है, इससे क्या लाभ होते हैं। कृपया इसके नियम बताइए?

समाधान- 'शंका-समाधान' एक आवश्यक कार्यक्रम है। ऋषि कहते हैं कि, जब-जब विद्वानों के समीप जाएं, तब-तब सबके कल्याण के लिए प्रश्नोत्तर अवश्य करें। "जब-जब विद्वानों के समीप जाएं, तब-तब सबके कल्याण के लिए" यह वाक्यांश खास ध्यान देने का है। अपने और सबके हित के लिए प्रश्न पूछें। इससे अपनी शंका का समाधान तो होगा ही, साथ ही दूसरों को भी लाभ मिलेगा। इस दृष्टि से प्रश्नोत्तर कर सकते हैं।

- 'शंका-समाधान' कार्यक्रम के बारे में कुछ बातें भूमिका के रूप में समझें। दरअसल, इसमें दो हिस्से हैं। एक हिस्सा है- शंका पूछना, और दूसरा हिस्सा है- उसका समाधान करना यानि कि उत्तर देना।

सवाल उठता है कि, इसमें से कौन सा हिस्सा सरल है? वस्तुतः शंका पूछना सरल है, जबकि उत्तर देना कठिन। सरल काम आपके हिस्से में है, और कठिन काम मेरे हिस्से में है, क्योंकि उत्तर मुझे देना है।

कोई भी काम अगर नियमपूर्वक किया जाए, तो उसमें बहुत लाभ होता ही है। यदि नियम तोड़कर काम करेंगे, तो उससे लाभ तो होगा नहीं, उलटे नुकसान ही होगा। कार्यक्रम 'शंका-समाधान' आपके लाभ के लिये शुरु किया गया है। अतः स्पष्ट है कि -

यदि 'शंका-समाधान' के नियमों का पालन करेंगे, तो बहुत लाभ होगा। इसके विपरीत, विहित नियमों का पालन नहीं करेंगे, तो नुकसान होगा।

भगवान की कृपा से, गुरुजनों के आशीर्वाद से मुझे काफी कुछ सीखने को मिला है। उसके आधार पर मैं आपके प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करूँगा। पर हम दोनों इस बात का ध्यान रखेंगे कि 'शंका-समाधान' के नियमों का पालन हो।

'शंका-समाधान' के मोटे-मोटे नियम बताता हूँ :-

- शंका पूछने वाला व्यक्ति 'जिज्ञासा भाव' से प्रश्न पूछे कि -

"हम तो बस जानना चाहते हैं।" अपनी समस्या को सुलझाने के लिए प्रश्न होना चाहिए। उत्तर देने वाला व्यक्ति भी इसी भावना से उत्तर दे कि सामने वाले की शंका दूर करनी है, उसकी समस्या को सुलझाना है। वह किसी और भावना से उत्तर नहीं दे।

आपकी जो समस्या जहाँ अटकी है, उसको सुलझाने के लिए ही उत्तर दिया जाएगा। उत्तर देने वाला भी इसी भावना से उत्तर दे कि मुझे इसकी शंका का समाधान करना है। जो समस्या अटक रही है, उसको सुलझाना है। उसका मार्ग स्पष्ट करना है, वो कहाँ अटका हुआ है, उसकी वो उलझन दूर करनी है। इस भावना से उत्तर देना चाहिए।

- पूछने वाला व्यक्ति कभी-कभी अपनी भावनाएं गलत बना लेता है। ऐसा व्यक्ति सोचता है कि - "मैं ऐसा प्रश्न पूछूँगा, जिसका सामने वाले को उत्तर ही नहीं सूझे।" वे लोग गलत सोचते हैं कि "हम ऐसा कठिन, टेढ़ा-मेढ़ा सवाल पूछेंगे कि सामने वाला जिसका उत्तर ही नहीं दे पाएगा। और जब वो उत्तर नहीं दे पाएगा, तब सब तमाशा देखेंगे। सब लोग उस पर हँसेंगे, तो बड़ा मजा आएगा। "याद रखें कि ऐसी भावना से प्रश्न पूछने से लाभ नहीं होता, बल्कि नुकसान ही होता है। इसलिए ऐसी भावना से प्रश्न पूछना ठीक नहीं है।

- आप भी एक गारंटी दें कि आप प्रश्न 'जिज्ञासा-भाव' से पूछेंगे और मन में कोई गलत उद्देश्य नहीं बनायेंगे।' दुःख देने के लिए, हार-जीत के लिए, सामने वाले को अपमानित करने के लिए, उसको नीचा और अपने को ऊँचा दिखाने के लिए प्रश्न-उत्तर नहीं करना है। मैं आपको अपनी ओर से गारंटी देता हूँ कि, आपकी समस्याओं को सुलझाने के लिए ही आप के प्रश्नों के उत्तर दूँगा। किसी को दुःख देना, अपमानित करना आदि एक प्रतिशत भी मेरा उद्देश्य नहीं है।

- कभी-कभी ऐसे प्रश्न भी सामने आ सकते हैं कि पूछने वाले ने एक प्रश्न पूछ लिया और बताने वाले को उत्तर समझ में नहीं आया। वहाँ पर मान-अपमान के कारण उसको झूठ नहीं बोलना चाहिए। उल्टा-पुल्टा कोई भी जवाब दे दें, ऐसा भी नहीं करना चाहिए। उत्तर नहीं सूझता तो साफ बोल दें - "भई, हमको उत्तर समझ में नहीं आया।"

पहले से मेरा स्पष्टीकरण सुन लीजिए। उत्तर मालूम है तो बता देंगे, नहीं मालूम तो साफ बोल देंगे कि, नहीं आता। झूठ नहीं बोलेंगे, जानबूझकर धोखा नहीं देंगे, यह गारंटी है। उत्तर आता नहीं है और तोड़मरोड़ करते रहें, ऐसा काम हमें नहीं आता है। ऐसा करना यम-नियम के विरुद्ध है।

- गुरुजी ने मुझे बहुत मजबूत बना दिया है। इसलिए मुझे तो कोई फर्क नहीं पड़ता। जिस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं पता है, मैं तो साफ बोल देता हूँ कि इस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं आता। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने की कोई गारंटी नहीं है।

जिस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं आता तो भविष्य में और पढ़ेंगे, सीखेंगे और कभी उत्तर समझ में आ जाएगा तो फिर आपको बताएंगे। जितना समझ में आएगा, उतना बता देंगे। यह हमारी ओर से गारंटी है। पक्की बात बताएंगे, पूरा जोर लगाएंगे।

हम बुद्धि से, तर्क से, शास्त्रों के आधार पर प्रामाणिक बात बताएंगे, ठीक बताएंगे, धोखा नहीं देंगे, छल नहीं करेंगे, गलत उत्तर नहीं देंगे। हाँ, अनजाने में कोई भूल हो जाए, तो वो एक अलग बात है।

- अज्ञानतावश कोई भूल हो गई, बाद में समझ में आ गई कि, यह तो गलत बात कह दी, तो उसका सुधार कर उसको ठीक कर देंगे। हम जानबूझकर गलत बात नहीं कहेंगे।

- योग-शिविर में प्रश्न लिखकर भेंजे तो अच्छा रहेगा। प्रश्न पूछने वाले प्रश्न के नीचे अपना नाम अवश्य लिखें, जिससे कि जरूरत पड़े तो पूछा जा सके कि- "भई, यह प्रश्न तो मुझे समझ में नहीं आया। इसका स्पष्टीकरण दीजिए।"

- हो सकता है कि, आपके विचारों और हमारे विचारों में अंतर हो। कई बातों में विरोध भी हो सकता है, टकराव हो सकता है, लेकिन कोई बात नहीं। आपने अब तक जैसा सुना-सीखा, आप वैसी बात जानते-मानते हैं। हमने जैसा सुना-सीखा, हम वैसा जानते-मानते हैं। परस्पर कुछ विचारों में अंतर हो सकता है। उसकी कोई चिंता नहीं। फिर भी आप प्रेमपूर्वक अपनी शंका पूछें और उतने ही प्रेमपूर्वक उसका उत्तर भी सुनें।

मान लो कि कोई बात आपने 20-30 साल से सुन रखी है, और वो बात आपको ठीक लगती है। और हमने यहाँ उसके विरुद्ध कोई बात बता दी कि, यह बात ठीक नहीं है। अतः आपको हमारी वो बात जचती नहीं है।

आपको बात समझ में नहीं आई तो कोई बात नहीं। उसके दो विकल्प हैं। पहला- या तो अलग से बैठकर कुछ विस्तार से बातचीत कर लेंगे। आगे और बताने का प्रयास करेंगे, प्रमाण देंगे, तर्क देंगे। हो सकता है कि बात कुछ समझ में आ जाए।

- समझाने पर भी समझ में नहीं आया तो झगड़ा नहीं करेंगे। आपकी ओर से भी ऐसी गारंटी मिलनी चाहिए कि आप भी झगड़ा नही

करेंगे, झगड़े के लिए प्रश्न नहीं पूछेंगे। आप केवल जिज्ञासा-भाव से प्रश्न पूछेंगे।

● दूसरा विकल्प है - जो बात समझ में नहीं आई, उसको साइड में विचाराधीन (पेंडिंग) के रूप में रख दें। आगे उस पर और विचार करते रहेंगे। जरूरी नहीं कि हर एक बात आपको समझ में आ ही जाए। आपने प्रश्न पूछा, हमने उत्तर दिया। हम इस बात की कोई गारंटी नहीं लेते कि आपको हमारी सारी बातें आज ही समझ में आ जाएंगी। ऐसा बिलकुल नहीं होगा।

● कुछ ऐसी बातें होती हैं, जिनको समझने में समय लगता है। जो बात समझ में न आये, तो कोई बात नहीं। यह न कहें कि, आपका उत्तर गलत है। आपका यह कहना अनुचित है। यह आपका अधिकार नहीं है।

● अगर आप मुझसे यह कहते हैं कि 'आपका उत्तर गलत है', तो इसका मतलब यही हुआ कि सही उत्तर क्या है, वह आप पहले से जानते हैं। और जब आप सही उत्तर जानते हैं, तो फिर प्रश्न पूछा क्यों? मेरी परीक्षा लेने के लिए नहीं आए आप। यह गलत बात है। यदि आप परीक्षा लेने की भावना से प्रश्न पूछेंगे, तो आपको नुकसान हो सकता है। इसलिए परीक्षा लेने के उद्देश्य से कोई प्रश्न न पूछें। अपनी समस्या को सुलझाने के लिए पूछें और इसी भावना से मैं आपको प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करूँगा।

● उत्तर समझ में आया तो बहुत अच्छा, नहीं आया तो चिंतन करें, विचार करें। जो लोग कुछ स्वाध्याय करते हैं, शास्त्रों को पढ़ते हैं, अध्ययन करते हैं, कुछ पृष्ठभूमि बनी हुई है, उनको हमारी बात जल्दी समझ में आएगी।

जो स्वाध्याय नहीं करते, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, दर्शन, उपनिषद्, वेद, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों का अध्ययन नहीं करते, तो उनको बात समझने में देर लगेगी। उनका बैकग्राउण्ड नहीं है। अगर आपने पहले से कुछ स्वाध्याय किया है, आपका कुछ पूर्वचिन्तन है, तो हो सकता है कि बात आज ही आज आपको समझ में आ जाए। अगर स्वाध्याय कम है तो हो सकता है कि आज समझ में नहीं आए।

● आज आप उस बात को सुनें, उस पर विचार करें, लेकिन फिर भी समझ में नहीं आए। हो सकता है कि एक हफ्ते में समझ में आ जाए। समझने में अधिक समय भी लग सकता है। दो हफ्ते, पन्द्रह दिन, एक माह, दो माह, छह माह भी लग सकते हैं। कोई-कोई बात ज्यादा कठिन

होती है कि, वो छह महीने में भी समझ में नहीं आती। ऐसी कठिन-कठिन बातें भी होती हैं, जिनको समझने में कई-कई वर्ष लग जाते हैं। कुछ बातें दिमाग में कई वर्षों के बाद बैठती हैं।

● बात समझ में नहीं आयी, तो कोई चिंता की बात नहीं है। झगड़ा नहीं करना, यह नहीं कहना कि आपका उत्तर गलत है। यह कहना ठीक है कि - "आपने उत्तर दिया, मगर वो हमारी समझ में नहीं आया। इस पर हम और सोचेंगे, विचार करेंगे, पढ़ेंगे, अध्ययन करेंगे। धीरे-धीरे समझ में आएगा।" एक उदाहरण दे रहा हूँ। प्रश्न है - संसार में व्यक्ति को सम्मान की इच्छा करनी चाहिए या अपमान की इच्छा करनी चाहिए? प्रायः सबका उत्तर यही होगा कि सम्मान की इच्छा करनी चाहिए। यह उत्तर गलत है। सही उत्तर है- अपमान की इच्छा (आध्यात्मिक व्यक्ति को) करनी चाहिए। दरअसल, यह बात आपकी समझ में आज तो नहीं बैठेगी। इसको दिमाग में बैठाने के लिए कई साल चाहिए। कई साल तपस्या करनी पड़ेगी, तब यह बात समझ में आएगी कि अपमान की इच्छा करनी चाहिए। यह मेरे अपने घर की बात नहीं है। यह महर्षि मनु जी की बात है। मनुस्मृति में कहा है -

सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव ।
अमृतस्येव चाकाङ्क्षेदवमानस्य सर्वदा ॥

"ब्राह्मण, योगाभ्यासी सम्मान से ऐसे डरता रहे, जैसे व्यक्ति विष से डरता है। जैसे जहर से डर लगता है, ऐसे ही व्यक्तिको सम्मान से डरना चाहिये। अपमान की इच्छा ऐसे करनी चाहिए, जैसे व्यक्ति अमृत की इच्छा करता है।" यह बात समझने में बड़ी कठिन है।

● ऐसे ही और भी बहुत सी बातें होंगी जो आपको आज समझ में न आएं, तो इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं है। वो बातें सच्ची हैं, प्रमाणिक हैं। धीरे-धीरे समझ में आएंगी। कुछ सरल बातें होती हैं, कुछ कठिन बातें होती हैं। सरल बातें जल्दी समझ में आ जाती हैं, कठिन बातों को समझने में समय लगता है। यही सिद्धांत है।

● 'शंका-समाधान' का एक नियम यह है कि प्रश्न पूछने वाला व्यक्ति शंका के रूप में अपनी बात को रखे कि - "यह बात हमारी समझ में नहीं आयी। कृपया हमको समझाइए।" इस तरह से बात नहीं रखे कि - "मैं ऐसा-ऐसा मानता हूँ।" इसका मतलब यह कि आपने तो अपने पक्ष की स्थापना कर दी, यह तो 'शंका-समाधान' नहीं रहा। इसका नाम है - 'शास्त्रार्थ'।

- जब आप अपने पक्ष की स्थापना करते हैं कि "मैं ऐसा मानता हूँ", तो फिर यह शास्त्रार्थ हो गया। आप ऐसा मानते हो और मैं ऐसा मानता हूँ, तो फिर दोनों के विचारों में टक्कर है। यहाँ टक्कर नहीं करनी है।

- अगर किसी को टक्कर करने का शौक है, तो अलग से बैठकर करेंगे। मैं टकराने के लिए भी तैयार हूँ, डरता नहीं हूँ। पर इस समय टकराने का काम नहीं है। इस समय तो 'शंका-समाधान' का काम है। इसी उद्देश्य से हम इस कार्यक्रम को चलाएंगे। इस प्रकार इन नियमों का पालन करें। आपको बहुत लाभ होगा।

2. शंका- क्या संसार में कहीं सुरक्षा नहीं है। माँ की गोद में भी नहीं?

☞ समाधान- संसार में कहीं भी सुरक्षा नहीं है। पूरी सुरक्षा केवल 'मोक्ष'

में है। तीन प्रकार से हम पर आपत्ति आ सकती है :-

(1) एक तो अपनी मूर्खता से, अपनी गलतियों से हम नुकसान उठा लेते हैं। सड़क पर चलते हुए दुकान या बोर्ड देख रहे हैं। जिससे सड़क पर पड़े ऊँचे-नीचे पत्थरों पर हमने ध्यान नहीं दिया और पाँव टकराया, धड़ाम से गिरे, हाथ-पाँव टूट गए। किसकी गलती हुई? हमारी गलती।

सड़क पर केले का छिलका आ गया, हमने उस पर ध्यान नहीं दिया, पाँव पड़ गया, धड़ाम से गिर गए और कमर की हड्डी टूट गई। किसकी गलती से? हमारी गलती से।

इस तरह एक क्षेत्र ऐसा है, जहाँ हम अपनी गलतियों से नुकसान उठाते हैं। अपनी मूर्खता से जो गलतियाँ की, उससे जो दुःख मिला, उसका नाम है- 'आध्यात्मिक दुःख'।

(2) दूसरा क्षेत्र ऐसा है, जहाँ दूसरे प्राणियों की गलतियों से हमको दुःख भोगना पड़ता है। आपका प्रश्न है कि क्या माँ की गोद में हमको नुकसान हो सकता है? उत्तर है कि - माँ ने कोई गलत दवा या खान-पान में कुछ गलत चीज खा ली तो बच्चे को नुकसान हो गया। पिता की भूल से हमको नुकसान हो सकता है। किसी पड़ोस के बच्चे ने क्रिकेट में बॉलिंग की और उसकी बॉल हमारी आँख में लगी। पूरी आँख बेकार हो गई। उसकी गलती से जीवन भर के लिए हमको नुकसान हो सकता है। सड़क पर चल रहे हैं। पीछे से चुपचाप एक कुत्ता आया और उसने टाँग काट ली। स्कूटर वाला, कार वाला हमको ठोंक दे। हम ऐसे किसी गलत गुरु-आचार्य के पल्ले पड़ गए और उसने हमको उल्टे पाठ पढ़ा दिए और मोक्ष के मार्ग से कहीं और भटका दिया। उससे भी हमको नुकसान हो सकता है।

दूसरे व्यक्तियों के कारण से, साँप से, बिच्छुओं से, शेर आदि दूसरे प्राणियों के कारण से, इनके अन्याय से भी हमको दुःख भोगने पड़ सकते हैं। इसे 'आधिभौतिक-दुःख' कहते हैं।

(3) तीसरी हैं - प्राकृतिक दुर्घटनाएं। जैसे - भूकंप, तूफान, बाढ़, आँधी, चक्रवात, सूखा, अकाल, वर्षा आदि। मकान गिर जाते हैं, बाढ़ का पानी भर जाता है। प्राकृतिक दुर्घटनाओं से भी हमको नुकसान उठाना पड़ता है तो दुःख होता है। इसी का नाम है- 'आधिदैविक-दुःख'।

उपरोक्त तीन प्रकार के दुःख हैं। आपने जन्म ले लिया तो कहीं भी सुरक्षा नहीं। कोई न कोई दुःख आएगा ही।

महर्षि कपिल कहते हैं - 'कुत्रापि कोऽपि सुखी न'। सीधा सरल वाक्य है। धरती पर कहीं भी कोई भी व्यक्ति पूरा सुखी नहीं है। एक सुख मिलता है, उसके पीछे चार दुःख आते हैं तो सौदा मँहगा पड़ता है। चार रुपए की खरीदी और बिक्री मूल्य एक रुपया। ये कैसा घाटे वाला व्यापार है। सुख मिलता है - 'एक' और दुःख मिलते हैं - 'चार'। इसलिए चारों ओर दुःख ही दुःख है। धरती पर कोई भी पूर्ण सुखी नहीं है। दार्शनिक दृष्टि से सारे दुःखी हैं। दर्शन शास्त्र मानसिक सुख-दुःख की बात कर रहा है। मन में अविद्या, क्रोध, लोभ आदि के कारण सारे लोग दुःखी हैं। इस दृष्टि से दुःख अधिक है।

'सत्यार्थ प्रकाश' में महर्षि दयानंद जी ने लिखा है कि संसार में

सुख अधिक है। उनका तात्पर्य है कि - शारीरिक स्तर पर, बाह्य स्तर पर सुख अधिक है। महर्षि दयानंद बाह्य स्तर की बात कर रहे हैं और

महर्षि कपिल, महर्षि पतञ्जलि आन्तरिक स्तर की बात कह रहे हैं। दोनों ठीक कह रहे हैं। बाह्य स्तर पर तो सुख अधिक है और मानसिक स्तर पर दुःख अधिक है। शारीरिक और मानसिक दोनों दुःख की तुलना करते हैं तो मानसिक ज्यादा हानिकारक है। और मानसिक स्तर पर दुःख अधिक है। इसलिए कपिल मुनि जी कहते हैं - तीन दुःखों से छूटो।

यह मनुष्य का सबसे ऊँचा लक्ष्य है। पूरी सुरक्षा केवल मोक्ष में है। इसलिए फटाफट मोक्ष में सरक जाओ।

3. शंका- सृष्टि (जगत्) में सभी जीव, परमात्मा के लिए संतानवत् हैं तो परमात्मा प्राकृतिक प्रकोप के द्वारा क्या दर्शाना चाहता है-दयालुता या न्यायकारिता? कई जीव पृथ्वी पर पैर रखते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। ऐसा क्यों?

☞ **समाधान-** प्रश्नकर्ता ने पूछा है कि इससे ईश्वर अपनी दयालुता दिखाना चाहता है या न्यायकारिता। इसका अर्थ कहीं न्यायकारिता हो सकता है और कहीं यह भी हो सकता है कि भगवान ने पहले ही कह रखा था कि मैं सृष्टि बनाऊँगा और इसमें दुर्घटनाएं होंगी। आपका काम है, दुर्घटना से बच के चलना।

एक इंजीनियर ने कार बनाकर उससे सम्बन्धित पूरा विवरण बुकलेट में छापकर खरीददार को दे दिया। खरीददार को बता दिया गया कि पहले बुकलेट पढ़नी है और इसको समझ के फिर कार का इस्तेमाल करना है।

बुकलेट में पहले से ही यह सूचना दे रखी है कि जब कार का इंजन स्टार्ट होगा तो इंजन में गर्मी बढ़ेगी। और जब गर्मी बढ़ेगी तो उसके